

गाँव का खेल मेला

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे गाँव किशनपुरा में वार्षिक खेल मेले का आयोजन किया गया। इन खेलों में ऊँची कूद, साइकिल दौड़, 100 मीटर, 200 मीटर, कबड्डी, कुश्ती तथा रेलगाड़ियों की दौड़ को शामिल किया गया। सारे गाँव को दुल्हन की तरह सजाया गया था। बच्चे, नौजवान, बूढ़े तथा स्त्रियाँ सभी गाँव के खेल मेले को बड़े उत्साह से देखने पहुँचे। यह खेल मेला दो दिन तक चला। खेल का उद्घाटन गाँव के सरपंच द्वारा किया गया। उन्होंने खिलाड़ियों से अपील की कि वे लग्न तथा मेहनत से खेलें तथा भविष्य में देश का नाम रोशन करें। पहले दिन ऊँची-कूद, साइकिल दौड़, 100 तथा 200 मीटर खेलों का आयोजन किया गया। दूसरे दिन पहले कुश्ती, कबड्डी तथा साइकिल दौड़ का आयोजन किया गया। कुश्ती व कबड्डी के खेल ने सभी गाँव वासियों का मनोरंजन किया। अंत में रेलगाड़ियों की दौड़ ने भी सभी का खूब मनोरंजन किया। इसके बाद 'भंगड़े' ने लोगों को नाचने पर मजबूर कर दिया। अतिथि द्वारा जीतने वाले खिलाड़ियों को इनाम बाँटे गये। सचमुच, हमारे गाँव का खेल मेला बहुत ही रोचक तथा रोमांचकारी होता है, जिसकी लोगों को साल भर प्रतीक्षा रहती है।

परीक्षा में अच्छे अंक पाना ही सफलता का मापदंड नहीं

यह ठीक है कि परीक्षा में अच्छे अंक पाने वाले का सभी जगह सम्मान होता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और अच्छे भविष्य के लिए उसका रास्ता आसान हो जाता है। किन्तु सिर्फ यही सफलता का मापदंड नहीं हैं। कम अंक प्राप्त करके भी समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया जा सकता है। अकादमिक क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्र भी हैं। अपनी रुचियों और क्षमताओं को पहचानकर अपने मनपसंद क्षेत्र में परिश्रम व दृढ़निश्चय के सहारे कूद पड़ने पर अपार सफलता मिल सकती है। स्कूल स्तर पर औसत दर्जे के समझे जाने वाले वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने बाद में अद्भुत आविष्कार किए। मुंशी प्रेमचंद ने दसवीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की और दो बार फेल होने के बाद इंटरमीडिएट कक्षा पास की। इसके बावजूद भी पूरे विश्व में वे हिंदी के उपन्यास सम्राट के रूप में जाने जाते हैं। सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी क्रिकेट

में अच्छे प्रदर्शन की वजह से जाने जाते हैं न कि अकादमिक तौर पर। इसी तरह अनेक स्वतंत्रता सेनानी, खिलाड़ी, संगीतज्ञ, गायक, अभिनेता, राजनीतिज्ञ, व्यापारी आदि हुए हैं जिन्होंने अकादमिक तौर पर नहीं अपितु अपने अपने क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बल पर सफलता के शिखर को छुआ है। अतः अंकों की तरफ ध्यान न देकर आशावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

भ्रमण: ज्ञान वृद्धि का साधन

पाठ्य-पुस्तकें, अखबार, मैगजीन पढ़कर ज्ञानार्जन किया जा सकता है। रेडियो को सुनकर व टेलीविज़न पर देश-विदेश की झलकियों के बारे में सुनकर-देखकर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु भ्रमण आनन्द के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि का अनुपम साधन है। भ्रमण का महत्त्व इस बात से भी लगाया जा सकता है कि पुस्तकों आदि में जो ज्ञान दिया गया है वह इतिहासकारों, विद्वानों, वैज्ञानिकों, खोजकर्ता व महापुरुषों के भ्रमण का ही परिणाम है। ऐतिहासिक व धार्मिक स्थानों का भ्रमण करके जो मन को शांति, सौन्दर्यानुभूति व ज्ञान मिलता है वह केवल किताबें पढ़ने पर नहीं हो सकता। इसी प्रकार ऊँचे-ऊँचे पर्वतों, नदियों, झीलों, झरनों, वनों, समुद्रों आदि पर भ्रमण करके ही प्राकृतिक सुंदरता का आनन्द व ज्ञान लिया जा सकता है। ऐसा ज्ञान सुनने-पढ़ने की अपेक्षा अधिक जीवंत होता है। भ्रमण करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। अन्य स्थानों पर भ्रमण की उत्सुकता बढ़ती है। उत्सुकता तो ज्ञान-वृद्धि की मुख्य सीढ़ी है। निस्संदेह, भ्रमण के बिना तो ज्ञान अधूरा ही कहा जाएगा।

प्रकृति का वरदान : पेड़-पौधे

ईश्वर ने सम्पूर्ण जगत के प्राणियों को अनेक अमूल्य उपहार दिए हैं जिनमें से पेड़-पौधे मुख्य हैं। सचमुच, ये हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। इनका हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पेड़ दुर्गन्ध लेते हैं और सुगन्ध लौटाते हैं अर्थात् ये कार्बन डाईऑक्साइड ग्रहण करके हमें ऑक्सीजन देते हैं। ये सूर्य की गर्मी को स्वयं सहन करके हमें छाया प्रदान करते हैं, इसलिए

ये परोपकारी हैं। इनसे हमें फल और फूल, ईंधन, गोंद, रबड़, फर्नीचर की लकड़ी, कागज़ आदि मिलते हैं। पेड़ पौधों से वातावरण शुद्ध बनता है तथा भूमि की उर्वरता बढ़ती है क्योंकि इनकी पत्तियाँ खाद बनाने के काम आती हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी इनकी अहम भूमिका है। पेड़ों के पत्तों, जड़ों, फलों, फूलों तथा छाल आदि से कई प्रकार की दवाइयाँ बनती हैं। धार्मिक दृष्टि से तो पेड़ों का बहुत महत्त्व है। ऐसे भी कई पेड़ पौधे हैं जिन्हें पूजा जाता है जैसे-तुलसी, पीपल, केला, बरगद, आम आदि। पेड़ों का सम्बन्ध रोज़गार से भी जुड़ा है। पेड़ों से लोग टोकरियाँ, बैग, चटाइयाँ, पेंसिलें, फर्नीचर आदि बनाकर अपना करते हैं। पेड़-पौधों का इतना महत्त्व होने पर इनका संरक्षण करना चाहिए। ये हमें लाभ ही देंगे। कहा भी है-पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ।

शिक्षा विभाग, पंजाब

(मार्गदर्शक:- डॉ. सुनील बहल, असिस्टेंट डायरेक्टर एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब)



तैयार कर्ता:- राजन शर्मा, जालंधर व राजन, अमृतसर शोधक:- सुमन सहगल, जालंधर



